IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन"

लेखक: पर्यवेक्षक:

अनूप कुमार(शोध छात्र) डॉ.काव्या दुबे (प्रोफेसर)

बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी (उ.प्र.) बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी उ.प्र.

सारांश :

इस शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है |अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों से चयनित विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से डाटा संकलित किया गया है |परिणामों से यह स्पस्ट हुआ की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के स्तर में विद्यालय के प्रकार एवं भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार अंतर पाया जाता है |यह शोध शिक्षा नीतियों और पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है |यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पार्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के स्तर की जाँच करता है |अध्ययन में सरकारी एवं निजी विद्यालयों तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना की गई है |वर्णात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करते हुए 100 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यद्रिच्छक नमूना पद्धति से किया गया है |डेटा एक मानकीकृत पर्यावरण जागरूकता स्केल से एकत्र किया गया तथा परिक्षण एवं प्रतिशत विश्लेषण के माध्यम से विश्लेषित किया गया |परिणामों से विभिन्न श्रेणियों के विद्यार्थियों के बीच जागरूकता स्तर में महत्वपूर्ण अंतर का पता चला |

प्रमुख शब्द :

पर्यावरण,जागरूकता,माध्यमिक छात्र,तुलनात्मक अध्ययन,ग्रामीण-शहरी,शासकीय-अशासकीय|

प्रस्तावना :

पर्यावरण मानव जीवन का अभिन्न अंग है |यह हमें जल,वायु.भूमि.ऊर्जा.खनिज तथा जीव-जंतुओं के रूप में प्राकृतिक संसाधन प्रदान करता है | वर्तमान समय में उद्योगीकरण,शहरीकरण,जनसँख्या वृद्धि और अत्यधिक उपभोग के कारण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है | ऐसे में विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है| माध्यमिक स्तर वह अवस्था है,जब विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण तीव्र गति से होता है वह समाज में अपनी भूमिका को समझने लगता है | इस शोध का उदेश्य माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के ग्रामीण अवं शहरी विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है | अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों से चयनित विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संकलित किया गया|परिणामो से यह स्पस्ट हुआ की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के स्तर में विद्यालय के प्रकार एवं भोगोलिक क्षेत्र के अनुसार अंतर पाया जाता है|यह शोध शिक्षा नीतियों और पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है |पर्यावरण शब्द का अर्थ होता है परि और आवरणअर्थात हमें जो चरों ओर से घेरे हुए है वही पर्यावरण है|पर्यावरण उन सभी भोतिक,रासायनिकएवं जैविक कारकों की समस्तिगत इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा परितंत्रीय अवादी को प्रभावित करते है तथा उनके रूप,जीवन और जीविता को तय करते है|सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों,तथ्यों प्रक्रियाओं घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है,यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी के अन्दर सम्पादित होती है तथा हम मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को प्रभावित करते है |पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े-मकोड़े सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधे आ जाते है और इसके साथ ही उनसे जुडी सारी जैव क्रियाये और प्रिक्रियायें भी है| अजैविक संघटकों में जीवन रहित तत्व और उनसें जुडी प्रिक्रियायें आती है| जैसे चट्टानें,पर्वत,नदी,हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि | मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो प्रखंडों में विभाजित किया जाता है पहला है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और दूसरा मानव निर्मित पर्यावरण| प्राकृतिक पर्यावरण जिसमे मानव हस्तक्षेप बिलकुल न हुआ हो जबकि मानवनिर्मित पर्यावरण जिसमे सब कुछ मनिष्य निर्मित |यह विभाजन प्राकृतिक प्रिक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता का द्योतक मात्र है |

उद्देश्य :

1.माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की तुलना करना |

2.माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की तुलना करना |

3.माध्यमिक स्तर की शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की तुलना करना |

4.मायमिक स्तर के अशासकीय विद्यार्थियों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की तुल्नमा करना |

परिकल्पना:

1.माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नही हैं |

2.माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है |

3.माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यार्थियों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है |

4.माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यार्थियों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है |

अध्ययन से सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण:

यादव,नेहा गुप्ता (2017)ने अपने शोध प्रबंध माध्यमिक स्तर की छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा तथा जागरूकता तथा परिक्षण किया तथा निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर की छात्राओं का पर्यावरण तथा जागरूकता संतोष जनक नहीं पाई गयी|

शर्मा,सीमा (2016) ने अपने शोध प्रबंध पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन छात्राध्यापक और शिक्षक के रिश्ते और उनके आदतों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि पुरुष और महिला शिक्षक में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

पलटा सिंह,श्रेयांशी(2010) ने अपने शोधकर्ता बी.एड.कोर्स करने बाले शिक्षक प्रशिक्षणथियों की पर्यावरण जागरूकता पर विभिन्न सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि बी.एड.कोर्स करने बाले शिक्षक प्रशिक्षणर्थियोंकी पर्यावरण जागरूकता पर्लिंग तथा पिता की शिक्षा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि हौशिक प्रष्ठभूमि शिक्षा का माध्यम निवास स्थान जाती तथा माता की शिक्षा आदि करक पर्यावरणीय जागरूकता को प्रभावित करते है |

मैखुरी आर,व् उनियाल,ए.पी.(2008)ने स्नातक के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन किया और पाया किराजकीय कॉलेज की अपेक्षा उन कोलेजों के छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर अधिक है जहाँ पर्यावरण शिक्षा की पाठ्यक्रम में व्यवस्था थी |

तिवारी,संतोष (2010) ने जनपद हमीरपुर में स्थित छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय तथा सम्बंधित महाविद्यालयों में एम.एड.के छात्राओं के पर्यावरण शिक्षा के प्रति विचारों का अध्ययन किया|

अनुसन्धान विधि :

यह अध्ययन वर्णात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है |

अध्ययन के उपकरण:

पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु डॉ.प्रवीण कुमार झा (मनोविज्ञान विभाग टी.पी.कॉलेज मधेपुरा बिहार) दुवारा निर्मित मानकीकृत (□□□□)परिक्षण का प्रयोग किया गया है |

न्यादर्श का आकार :

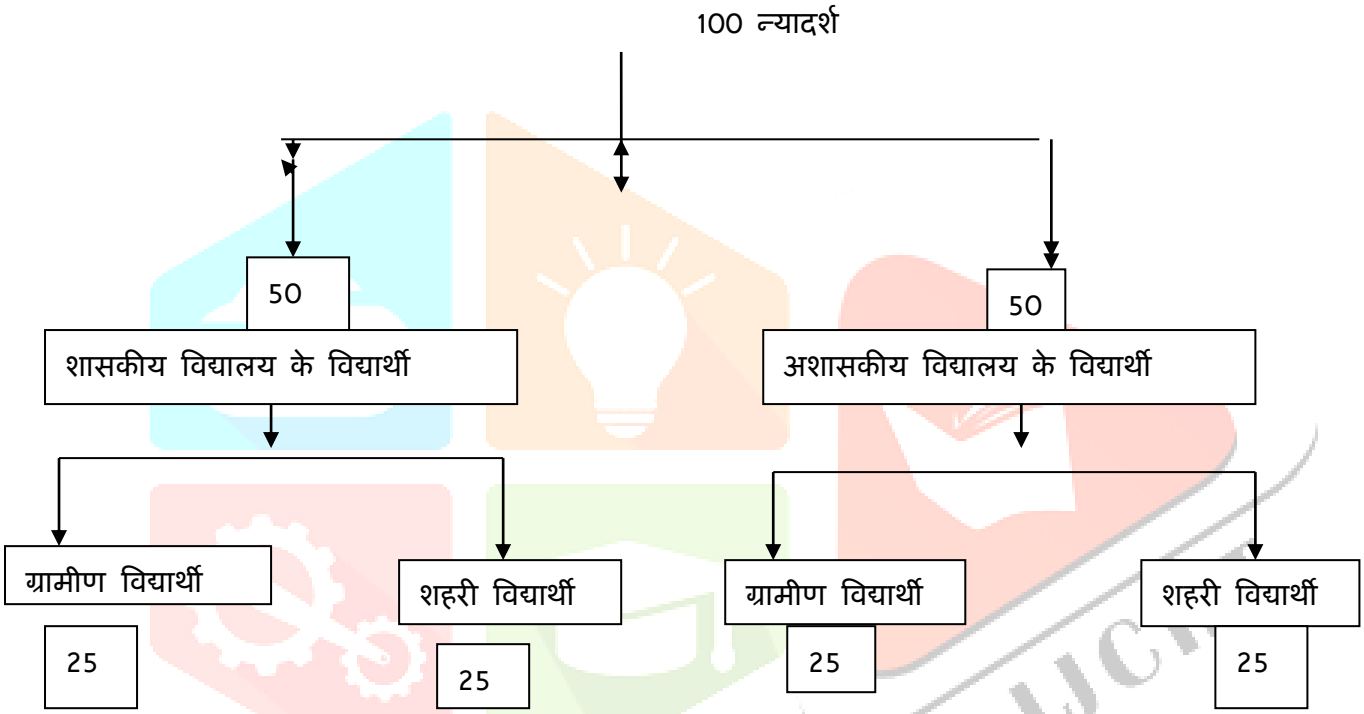

मुख्य परिकल्पना का परिक्षण:

परिकल्पनाओं की जाँच से संबंधित तालिकाएँ

परिकल्पना – 1

शोध समूह	संख्या	माध्य (औसत)	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	विश्वास स्तर	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालय	50	78.0	6.2	1.24	0.16	0.05	सार्थक अंतर नहीं
अशासकीय विद्यालय	50	77.8	5.9	-	-	-	-

शोधकर्ता द्वारा ज्ञात किया गया क्रांतिक अनुपात 0.16 है, जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 से कम है। अतः दोनों समूहों के विद्यार्थियों के पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना – 2

शोध समूह	संख्या	माध्य (औसत)	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	विश्वास स्तर	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालय (शहरी विद्यार्थी)	25	79.0	5.9	1.67	0.24	0.05	सार्थक अंतर नहीं
अशासकीय विद्यालय (ग्रामीण विद्यार्थी)	25	78.0	6.0	-	-	-	-

क्रांतिक अनुपात 0.24 है, जो कि 0.05 स्तर पर 1.96 से कम है। इसलिए दोनों समूहों के बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना – 3

शोध समूह	संख्या	माध्य (औसत)	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	विश्वास स्तर	निष्कर्ष
ग्रामीण विद्यार्थी	25	78.8	5.9	1.67	0.12	0.05	सार्थक अंतर नहीं
शहरी विद्यार्थी	25	79.0	6.1	-	-	-	-

क्रांतिक अनुपात 0.12 है, जो कि 1.96 (0.05 स्तर) से कम है। अतः ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष:

निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता अधिक पाई गयी है |इसके आलावा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की जागरूकता ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से काफी अधिक है |लिंग के आधार पर देखा जाये तो लड़कियों की पर्यावरण जागरूकता लड़कों की तुलना में थोडा अधिक पाई गयी | कुल मिलकर अध्ययन से स्पस्ट होता है की विद्यालय का प्रकार,भोगोलिक क्षेत्र और लिंग, पर्यावरण संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता को प्रभावित करते है |

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ:

शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया अतः वहां पर्यावरण शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने हेहू शिक्षण में व्यावहारिक गतिविधियाँ,चर्चाएँ एवं परियोज्नात्मक कार्य सम्मिलित किये जाने चाहिए |

अशासकीय विद्यालयों में अपनाई जा रही पर्यावर्णीय शिक्षण पद्धतियों एवं नवाचारों को शासकीय विद्यालयों में भी अपनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि जागरूकता के स्तर में समानता लायी जा सके |

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ने के लिया विद्यालय स्तर पर स्थानीय पर्यावरण समस्याओं से सम्बन्धित कार्यशालाओं,प्रतियोगिताएं एवं स्वच्छता अभियान आयोजित किये जाने चाहिए |

लड़कियों की पर्यावरण जागरूकता लड़कों से अधिक पायी गयी,अतः उन्हें विद्यालयों में पर्यावरण सम्बन्धी नेतृत्वकारी भूमिकाएं प्रदान की जनि चाहिए जिससे बे अन्य विद्यार्थिओं के लिए प्रेरणास्रोत बन सकें |

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव :

शोधकर्ता ने अपने अनुसन्धान कार्य के द्वारान यह अनुभव किया की वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित आयामों पर विभिन्न पहलुओं से अध्ययन करने की आवश्यकता है |इस क्षेत्र में अभी भी अनुसन्धान की अनेक संभावनाएं है इसी उद्देश्य से भविष्य के अध्ययनों के लिया शोधकर्ता ने कुछ सुझाव दिए है जो निम्नलिखित हैं :

उरई नगर के अलावा अन्य नगरों,जिले पर भी शोध कार्य किये जाने आवश्यक है |

विभिन्न वर्गों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण संरक्षण में सहभागिता का अध्ययन किया जा सकता है |

विद्यार्थियों के अभिभावकों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का भी अध्ययययन किया जा सकता है |

विश्वविद्यालयों स्तर पर चलाये जा रहे पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन किया जा सकता है |

पर्यावरण शिक्षा में प्रिंट तथा एलेक्ट्रोंनिक मिडिया की भूमिका का अध्ययन किया जा सकता है |

माध्यमिक स्तर के अलावा भी अन्य स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता पर शोध कार्य किये जाने आवश्यक है ताकि अन्य स्तर के विद्यार्थियों की भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का परा लगाया जा सके |

महाविद्यालयों के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है |

राष्ट्रिय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने बाले पर्यावरण से सम्बंधित विभिन्न सेमीनार व् कन्फेंसों का जनमानस पर पड़ने बाले प्रभाव का अध्ययन संभव है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1) ओझा,अश्वनी कुमार(2007),पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, बोद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद प्रष्ठ 94 |
2) बहुगुणा,सुन्दरलाल (1984),राष्ट्रिय सन्दर्भ में पर्वतीय विकास योजना प्रष्ठ 4-19 |
3) बिहारी,रमन(2012),भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ प्रष्ठ 613-626 |
4) देवी,सरला (2005)संरक्षण या विनाश ,ज्ञानेशन , नैनीताल |
5) धनकड़,रविन्द्र (2009), समसामयिक महासागर अरिहंत प्रकाशन मेरठ प्रष्ठ 38-42 |
6) गोपाल,एम.के.(2012), पर्यावरण शिक्षा ,प्रकाशन श्री विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा 256-275 |
7) कुमार,रविश (2011),पर्यावरण संकट और पर्यावरण शिक्षा ,पर्यावरण डाईजेस्ट ,रतलाम समन्वय प्रकाशन मार्च 1-3 |
8) कुमार,मयंक (2003),पर्यावरण संरक्षण और विकास ,विमल पुस्तक मंदिर दिल्ली प्रष्ठ 4-68 |
9) पाठक,पी.डी.(2015),भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा 434-443 |
10) झा,प्रवीण कुमार(2017).माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन |भारतीय मनोविज्ञान अनुसन्धान पत्रिका ,32(2),45-52 |
11) शर्मा,सविता (2018).शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय दृष्टि कोण एवं पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन |शैक्षिक अनुसन्धान पत्रिका ,10(1),68-75
12) सिंह,रेखा एवं मिश्रा,दिनेश (2019).ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण चेतना का विश्लेष्णात्मक अध्ययन | शिक्षा विमर्श ,14(3),101-109
13) गुप्ता,निधि (2021).विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय संवेदनशीलता एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण का अध्ययन |शैक्षिक परिप्रेक्ष ,7(1),55-63
14) http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in
15) http://shodhgangotri.inflibnet.ac.in
16) http://eric.ed.gov
17) http://www.chatgpt.com